बाढ़ से 450 परिवार हुए बेघर

आपदा के दस दिन बाद भी प्रशासन ने नहीं ली सुध

अमर उजाला ब्यूरो

अमर उजाला

चंद्रापुरी में आपदा से ग्रामीणों का बर्बाद हुआ सामान।

रुद्रप्रयाग। जिला मुख्यालय से करीब 24 किमी दूर चंद्रापुरी बाजार, चंद्रापुरी गांव और गबनी गांव 16 और 17 जून की बाढ़ से पूरी तरह से बर्बाद हो गया है। केदारनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग और मंदाकिनी नदी किनारे बसे इन गांवों में स्थित दुकान, कई मंजिला होटल, घर और वाहनों को बाढ़ लील गई। अकेले चंद्रापुरी में बाढ़ से 450 परिवार बेघर हो गए हैं। चंद्रापुरी बाजार को गांव से जोड़ने वाला पुल बह गया है। ऐसे में गांव तक मदद पहुंचानी भी मुश्किल हो गई है।

चंद्रापुरी से राहत सामग्री वितरित कर लौटी बार काउंसिल नैनीताल की टीम में शामिल बार काउंसिल के उपाध्यक्ष नंदन सिंह कन्याल, संजय रतूड़ी, जयवर्धन कांडपाल और प्रशांत खन्ना ने बताया कि समूचे क्षेत्र का संपर्क कटने से पैदल मार्ग ही विकल्प बचे हैं। टीम मोहनखाल-चंद्रनगर-बांसवाड़ा मोटर मार्ग से कंडारा पहुंची। यहां से चंद्रापुरी बाजार (भटवाड़ी सुनार) चार किमी है। गबनी गांव में लोगों ने बताया कि उनके गांव में राशन नहीं है। गांव के नीचे नदी किनारे एक शव पड़ा है। प्रशासन को सूचना देने के बावजूद कोई नहीं पहुंच रहा है।जीएमवीएन गेस्ट हाउस के प्रबंधक कुलदीप रौथाण और भगवान सिंह गुसाईं ने बताया कि गेस्ट हाउस के साथ उनका सारा सामान बह गया है। डा. योगंबर नेगी ने बताया कि चंद्रापुरी में 250 भवन बह गए हैं। उनके चंद्रापुरी में दो घर और तीन दुकानें भी बाढ़ के भेंट चढ़ गए। चंद्रापुरी बाजार की स्थिति यह है कि अगस्त्यमुनि की ओर 50 मीटर और बांसवाड़ा की ओर 50 मीटर ही सड़क बची हुई है। बाजार के बीच से क्यूंजा गाड़ बहती है। सोमवार रात को गदेरे में अचानक पानी बढ़ गया, जिससे लोगों को घर छोड़कर जाना पड़ा। रात तीन बजे जलस्तर घटने पर लोगों की जान में जान आई। पहले नदी ने लगभग पांच किमी भाग को तहस-नहस कर डाला। अब क्यूंजा गाड़ से डर लग रहा है। वर्ष 1979 में क्यूंजा गाड़ ने भारी तबाही मचाई थी। अब लोगों के जेहन में वही तस्वीर उभर रही है।

चंद्रापुरी का पुल टूटा मदद पहुंचाने में हो रही है दिक्कत